Item Code: 645 Participant Code: 316

खेती अपनी संस्कृति

जीवन की यात्रा में हमें कई उतार-चढ़ाव देखने को मिलता है। लेकिन इन उतार-चढ़ाव में भी हमें कई चीज़ सीखने की अवसर मिलती है। आज हमारा समाज एक नए युग कि ओर बढ़ रहा है। जहाँ तकनीक, शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन हमारी जीवन को नए आयाम दे रहे है। इस नए युग में भी हमें अपनी मूल्यों, संस्कृति और आदर्शों को नहीं भूलना चाहिए। यह सीख हमें आगे बढ़ने की दिशा दिखाएगी और एक बेहतर भविष्य की ओर ले जाएगी। जीवन की यात्रा में हमें अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है लेकिन हमारी सीच ही हमें आगे बढ़ाती है। वर्तमान समय में हमारा समाज कई चुनौतियों की बीच भी आशा की किरण दिखाई देती है। इस आशा हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। जैसा कि महात्मा गाँधी ने कहा "एक नए युग की शुरुआत करने केलिए हमें नए विचारों और नए संकल्पों की

की आवश्यकता होती है।" आज हमारा समाज एक नए मोड़ पर खड़ा है। जहाँ अपनी अतीत के अनुभवों से सीखकर आगे बढ़ना होगा और एक बेहतर भविष्य बढ़ना होगा। यही सीख हमें आगे बढ़ने की दिशा दिखाएगी। इस संदर्भ में हमें 'खेती अपनी संस्कृति' के बारे में चर्चा करें।

प्रकृति हमारी माँ है। प्रकृति मनुष्य के लिए सब देती है। प्रकृति हमारी वरदान है। पुरानी लोग प्रकृति के साथ जीते थे। वे प्रकृति में खेती करके अपनी जीवन बिताते थे। उस समय मानव और प्रकृति के बीच शान्ती और सौहार्द भी होते थे। खेती हमारी संस्कृति था। सुबह से शाम तक किसान खेत में थे। प्रकृति के साथ गीत गाकर और नाचकर किसान अपनी काम करते थे। वह गीत प्रकृति और मनुष्य के बीच होनेवाली प्यार का गीत था। उस गीत हमारी संस्कृति का प्रतीक था।

इतिहास के पन्ने बदलते समय हमारे मन में खड़ा हुआ कुछ समाचार सुनो "प्राकृतिक आपदं के कारण वयनाड़ में हज़ार लोग मर गई, मलपुरम मृत्यु बीस से अधिक हो गई पानी न मिलने के कारण एक बच्चे मर गई।" समाचार पत्र में इसी तरह की समाचार भरने के मुख्य कारण हम मानव हैं। हमें हमारी संस्कृति के बारे में नहीं सोचकर प्रकृति में विरुद्ध काम करते हैं। आज खेत में बड़ा-बड़ा बिलडिंग होते हैं। खेती भूमि में माल और बड़ा-बड़ा घर होते हैं। मानव पेड़ और ~~नदि~~ नदी को मलिन करते हैं। प्रकृति मनुष्यों के लिए सब देते हैं लेकिन मनुष्य प्रकृति के लिए क्या किया? सूखी खेत और नदी हमें आपदा की दई देती हैं। जून 5 पर्यावरण दिवस में ~~मनुष्य~~ हरेक मनुष्य पेड़ और पौधा के साथ फोटो लेकर मीडिया में डालते हैं और प्रकृति संरक्षण के बारे में भाषण देते हैं।

ये सब अच्छा है लेकिन 364 दिवसों को भूलकर एक दिन प्रकृति के बारे ध्यान रखना केवल नाम केलिए है। खेती हमारी संस्कृति है और यह एक दिन केलिए नहीं है। यह पुरी मानव केलिए है और हमारी जीवन केलिए है।

केरला ईश्वर की वरदान था। यहाँ हरियाली पहाड़ और सुन्दर नदियाँ भी था। केरला के प्रकृति को देखकर सब लोग कहा "केरला ईश्वर की भूमी है"। लेकिन इस ईश्वर की ~~भूमी~~ भूमी की आज का स्थिति क्या है? 2018 में हुई प्राकृतिक आपदा में कई लोग मर गई। अनेक लोग को उनके घर नष्ट हो गई। 2020 में पेट्टिमल्ला में और 2024 में वयनाड़ में हुए आपदा आज भी हमारी मन में खड़ा है। प्रकृति से हमारा क्या प्रकृति के कारण हमारा देश सबका मन में खड़ा लेकिन आज हमारी प्रवृत्ति के कारण हमारा देश एक आपदाए के देश हो गए।

पुरानी काल में हमारी देश अपनी खेती को महत्वपूर्ण स्थान देते थे। केरला की खेती संस्कृति और खेती के बारे में केरला की ध्यान बिन बहुत प्रसिद्ध था। हर महीने किसान खेत में काम करते थे। केरला की उत्सवों भी खेती ~~संब~~ के बारे में थे। ओणम् केरला के कार्षिक उत्सव है। पुरानी काल में बच्चे हरेक घर जाकर फूल इकट्ठे और इस फूल से अपनी घरें आकर्षक बनते थे। अपनी खेत में पुरीमहीने काम ~~करते~~ करकर मिले ~~धान्य और~~ खाद्य वस्तु से सब्जी बनकर हरेक किसान अपनी घर में खुशी से उस दिन रहते है। धनु, मकरम जैसी महीने केरला किसान केलिए बहुत प्रधान है। प्रकृति के साथ जीने के कारण उस दिन हम सबके लिए बहुत ~~प्रधान है~~ खुशी का दिन था। लेकिन आज ओणम् जैसी उत्सवों ~~केलिए~~ फूल और फल या दाना खरीदने केलिए हम पंजाब, करनाडक जैसी देशों का आश्रय

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

करता है। आज हम सब की स्वास्थ्य भी बहुत खराब है। इसका कारण भी हम है। मोबाइल और लापड़ाप में रहते हुई आज के मानव को खेत और प्रकृति के बारे में सोचने केलिए समय नहीं मिलता है। प्रकृति में प्रकृति विरुद्ध काम करके वे अपने मृत्यु के बारे में नहीं सोचते हैं। प्रकृति नहीं है तो हम भी नहीं। इसलिए प्रकृति का संरक्षण करना हमारा दायित्व है। मोबाइल फोन के दुनिया के बाहर आओ और खेत में काम करो। वह हमारी संस्कृति है। हमारी जीवन को सुन्दर बनने केलिए और एक बेहतर भविष्य बनने केलिए अपनी अतीत के अनुभवों से सीखकर खेत में काम करो। खेती करते समय किसान भी कई चुनौतियाँ सामना करना पड़ता है। आर्थिक का कमी इसमें प्रधान है। हमारी संस्कृति को बचने केलिए किसान को सहाय देने हमारी और हमारी सरकार की दायित्व है।

खेती अपनी संस्कृति है। खेती को हमारी जीवन में महत्वपूर्ण स्थान होती है। आधुनिक समाज में खेती करने के लिए सबके घर में भूमि नहीं है। फिर भी एक छोटा वेजिटबिल उद्ध्यान बनना सबको संभव है। इसी तरह की छोटी छोटी काम से एक बड़ा सुन्दर समाज बनना हमारा दायित्व है। खेती और हमारी संस्कृति पहचानना हमारा दायित्व है। प्रकृति हमें वायु, जल और भोजन देते हैं। तो प्रकृति में खेती करके हमारी जीवन को सुंदर बनना हमारी कर्तव्य है। हमारी खेती संस्कृति के साथ रहकर अपनी धरती को माँ की तरह पहचानकर जीना हमारी दायित्व है। हमें हमारी संस्कृति को भूलकर जीते हैं तो हमारी मृत्यु और हर जानवरों की मृत्यु निशाच्य है। खेत हमारी दूसरा घर थे। धरती की साथ गीत गाकर, नाचकर, प्रकृति को प्यार देकर हमारी ~~पूर्व पिता~~ पुरानी संस्कृति को पहचानना बहुत ही

आवश्यकता है। क्योंकि आज होनेवाली सब प्राकृतिक आपदें की एक ही उपाय खेती है। खेती संस्कृति हमारी वरदान थी। खेती करो और जीवन बचाओ। किसान ईश्वर की समान है। खेती अपनी संस्कृति है। उसको पहचानना बहुत बड़ा आवश्यकता है। धरती की के साथ जीना बहुत ही महत्वपूर्ण है। खेती संस्कृति हमारी संस्कृति है और हमारीइस स्थिति में हमें पहचानने केलिए एक ही उपाय भी हमारी यह संस्कृति है। खेती संस्कृति को ~~अपनाना~~ अपनाने के कारण मानव की उन्नति होती है।

(This page will be scanned to publish the article in Schoolwiki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)